शोध – प्रस्तावना

"मीरा और नरसी मेहता के काव्य का तुलनात्मक अध्ययन"

हिन्दी विभाग
ज्योति विद्यापीठ महिला विश्वविद्यालय
जयपुर

शोध निर्देशक :

डॉ. सतीश कुमार
ज्योति विद्यापीठ
महिला विश्वविद्यालय,
जयपुर

शोधार्थी :

मधु देवी
हिन्दी–विभाग
ज्योति विद्यापीठ
महिला विश्वविद्यालय,
जयपुर

मानविकी एवं समाज
विज्ञान विभाग
प्रबन्धन एवं मानविकी संकाय

ज्योति विद्यापीठ महिला विश्वविद्यालय, जयपुर
जून – 2017

हिन्दी भक्ति साहित्य मे मीरां एक प्रमुख कवयित्री है। स्त्री भक्तों में भारत में तो क्या संसार में मीरां का स्थान अद्वितीय है। इसी प्रकार गुजराती साहित्य में भक्त कवियों में नरसी मेहता अद्वितीय स्थान रखते है। मीरां कृष्ण भक्त थी। उसकी भक्ति एकनिष्ठ, अनन्य और आराध्य के प्रति समर्पित थी। उसने कृष्ण को अपना पति और प्रियतम माना था। हिन्दी का कृष्ण काव्य भक्त कवयित्री मीरां के मृदु, सरल और सुन्दर पदों से बना है। अपने भक्ति क्षेत्र में मीरां अपना प्रतिद्वन्द्वी नहीं रखती है। लेकिन फिर भी नरसी मेहता और मीरां की प्रेम भक्ति में कुछ समानता देखने को मिलती है। मीरा भी नरसी मेहता की तरह पहले भक्त थी बाद में कवि।

गुजराती भाषा को काव्य भाषा के पद पर आसीन करने का श्रेय तथा सरस, मार्मिक काव्याभिव्यंजना का श्रेय गुजराती साहित्य में सबसे प्रथम नरसी मेहता को ही है। गुजराती का कृष्ण काव्य नरसी मेहता के प्रेम और भक्ति के रस से सिंचित होकर अत्यधिक सुरभित हुआ है।

मीरां और नरसी दोनों वैष्णव भक्त कवियों के कृतित्व और व्यक्तित्व के महता के अनुरूप साहित्य के इतिहास ग्रंथों में "नरसिंह–मीरां युग" नाम से एक स्वतंत्र काव्यकाल का निर्धारण किया गया है जिसकी मुख्य विशेषता भाव–प्रवण कृष्ण भक्ति से अनुप्रेरित पदों का निर्माण है।

नरसी मेहता को अपने रचना बाहुल्य और विषय वैविध्य के कारण गुजराती के आदिकवि का स्थान मिलता है। कृष्ण कविता का गौरवशाली प्रारम्भ मीरां और नरसी मेहता के द्वारा ही आरम्भ किया गया था। गुजराती साहित्य के कृष्ण काव्य के इतिहास में मीरां का स्थान नरसी के बाद दूसरा हैं। लेकिन अपने जीवन का काफी समय मीरां ने गुजरात में व्यतीत किया था। इस कारण गुजरात में मीरां की भाव–प्रवण वाणी का प्रसार नरसी मेहता से भी अधिक है। इन दोनों ही भक्त कवियों को स्थान भारतीय साहित्य में अत्यंत ऊँचा है। इन दोनों को ही कृष्ण भक्ति एवं कृष्ण काव्य को लोकप्रियता के चरम शिखर पर पहुँचाने का श्रेय प्राप्त है। मीरां भी नरसी मेहता की ही तरह सम्प्रदाय मुक्त, गुरू–शिष्य– परमपराविहीन वैष्णव भक्त थी। नरसी मेहता की भांति मीरा ने प्रेम लक्षणा भक्ति का अनुसरण किया है।

मीरां के व्यक्तित्व पर नरसी मेहता का प्रभाव देखने को मिलता है। हिन्दी और राजस्थानी की तरह मीरां के अनेक सरस पद गुजराती में भी पाए जाते है जो नरसी के पदों की भांति ही गुजराती जनता में लोकगीतों की तरह गाए जाते है। आज भी इनके पद प्रेम, श्रद्धा और भक्तिपूर्वक गाए और सुने जाते है। मीरां और नरसी मेहता दोनों ही भक्त कवियों पर भारतीय साहित्य को गर्व है।

विषय का महत्व

वर्तमान समय में हिन्दी भाषा और साहित्य के अध्ययन को एक व्यापक आयाम प्रदान करने के लिए यह आवश्यक है कि हिन्दी को केन्द्र मे रख कर भारत की अन्य भाषा में रचित साहित्य का अध्ययन किया जाये। जिससे कि हम अन्य भाषाओं के साहित्य की विविधताओं और एकता के तत्वों से परिचित हो सके। इसके लिए यह आवश्यक है कि विविध भाषाओं के साहित्य का तुलनात्मक रूप से अध्ययन किया जाये।

गुजराती और हिन्दी साहित्य के तुलनात्मक आयाम बहुत अधिमक है। नरसी मेहता पर हिन्दी में बहुत कम लिखा गया है। इसलिए मैंने इस विषय पर शोधकार्य करने का विचार बनाया है। "मीरा और नरसी मेहता के काव्य का तुलनात्मक अध्ययन" से गुजराती और हिन्दी भाषा साहित्य के प्रति पारस्परिक आत्मीयता स्थापित होगी। भाषा की आवाजाही को भी हम देख सकेंगे। इसके साथ ही प्रस्तावित शोध कार्य के माध्यम से हमें युगीन समाज को समझने में मदद मिलेगी तथा प्रस्तावित शोध कार्य के माध्यम से हमें भक्ति के अखिल भारतीय स्वरूप को समझने में मदद मिलेगी। इसके साथ ही प्रस्तावित शोध कार्य मीरां तथा नरसी मेहता की उपासना पद्धति, उनके दर्शन तथा उनके काव्य में निहित लोक तत्व को भी उजागर करने में सहायक सिद्ध होगा।

पूर्वकृत कार्य

1. गुजरात के संतों की हिन्दी साहित्य की देन

   डॉ. राम कुमार गुप्त

2. सूरदास एंव नरसिंह मेहता : तुलनात्मक अध्ययन

   डॉ. ललित कुमार पारिख

3. हिन्दी गुजराती संतों की ज्ञानाश्रयी धारा का तुलनात्मक अध्ययन

4. भागवत् धर्म और हिन्दी कृष्णकाव्य

   डॉ. कमलाकांत गुप्त

अध्ययन पद्धति

सर्वप्रथम शोध सामग्री का निर्धारण व संकलन किया जायेगा। अध्ययन पद्धति में तुलनात्मक रूप से विवेचन विश्लेषण किया जायेगा।

"मीरां एवं नरसी मेहता के काव्य का तुलनात्मक अध्ययन"

"मीरां एवं नरसी मेहता के काव्य का तुलनात्मक अध्ययन"

अध्यायीकरण

प्रथम अध्यान – मीरां का व्यक्तित्व एवं कृतित्व

(i) मीरा का जीवन

(क) जन्म एवं बाल्यावस्था

(ख) वैवाहिक जीवन एवं परिवार

(ग) यात्राएँ

(ii) मीरां का कृतित्व

(क) पदावली

(ख) रचनाओं की प्रामाणिकता

द्वितीय अध्याय – नरसी मेहता का व्यक्तित्व एवं कृतित्व

(i) नरसी मेहता का जीवन

(क) नरसी का जन्म एवं बाल्यावस्था

(ख) वैवाहिक जीवन एवं परिवार

(ग) यात्राएँ

(ii) नरसी मेहता का कृतित्व

(क) रचना प्राप्ति स्रोत

तृतीय अध्याय – **मीरां एवं नरसी महता के काव्य में भक्ति का तुलनात्मक विवेचन**

(i) मीरां एवं नरसी मेहता की सगुण भक्ति

(क) नवधा भक्ति

(ख) वात्सल्य भक्ति

(ग) माधुर्य भक्ति

(घ) भक्ति सम्प्रदायों का सम्पर्क एवं प्रभाव

(ii) मीरां एवं नरसी मेहता की निर्गुण भक्ति

(क) नाथों का प्रभाव

(ख) सन्तों का प्रभाव

चतुर्थ अध्याय – मीरां एवं नरसी मेहता की वैचारिक भूमि

(क) सामंतवाद का विरोध

(ख) कर्मकाण्ड का विरोध

(ग) मनुष्य की प्रतिष्ठा

(घ) अन्धविश्वास का विरोध

(ङ) छुआछूत का विरोध

(च) खोखली परम्पराओं का विरोध

पंचम अध्याय – मीरां एवं नरसी मेहता की दार्शनिक चेतना का तुलनात्मक विवेचन

(क) ब्रह्म की अवधारणा

(ख) जीव की अवधारणा

(ग) जगत् की अवधारणा

(घ) माया की अवधारणा

(ङ) मोक्ष की अवधारणा

षष्ठ अध्याय – मीरां एवं नरसी मेहता के काव्य के अभिव्यक्ति पक्ष का तुलनात्मक विवेचन

(क) रस विवेचन

(ख) भाषा

(ग) गेयता

(घ) अलंकार

(ङ) रीति

(च) गुण

संदर्भ ग्रन्थ सूची

आधार ग्रन्थ

हिन्दी ग्रन्थ

1. मीरांबाई की पदावली

   सं. श्री परशुराम चतुर्वेदी

   प्रकाशक – हिन्दी साहित्य सम्मेलन, प्रयाग

2. मीरा की प्रामाणिक पदावली

   सं. डॉ. भगवानदास तिवारी

   प्रकाशक – साहित्य भवन (प्रा.) लिमिटेड, इलाहाबाद

3. मेरे तो गिरधर गोपाल

   मीरांबाई की मूल पदावली

   ब्रजेन्द्र कुमार सिंहल

   प्रकाशक – भारतीय विद्या मंदिर, बीकानेर

4. मीरां की भाषा

   डॉ. शशि प्रभा

   स्मृति प्रकाशन, इलाहाबाद

5. संत मीराबाईजी

   जीवन एवं पदावली

   सं. जस्बीर जस्सी

   प्रकाशक – डेरा स्वामी जगत् गिरी, पठानकोट

6. मीरा मुक्तावली

सं. लक्ष्मी कमल ब्रजनारायण पुरोहित

प्रकाशक – श्री राम मेहरा एंड कम्पनी, आगरा

7. मीरा की प्रामाणिक पदावली

डॉ. भगवानदास तिवारी

साहित्य भवन (प्रा.) लिमिटेड, इलाहाबाद

गुजराती ग्रन्थ

1. नरसिंह मेहता कृत काव्य–संग्रह

सं. – इच्छाराम सूर्यराम देसाई

2. नरसैं मेहता : व्यक्तित्व अने कर्तृत्व

जेठालाल नारायण त्रिवेदी

3. नरसिंह मेहताकृत सुरत संग्राम

सं. हरगोविन्द द्वारकादास कांटावाला

4. नरसिंह मेहता कृत हारसमेनां पद अने हारमाला

नरसिंह मेहता : अेक अध्ययन

सं. केशवराम काशीराम शास्त्री

सहायक ग्रन्थ

हिन्दी ग्रन्थ

1. मध्यकालीन काव्य

लेखक – डॉ. सत्यनारायण शर्मा

पंचशील प्रकाशन, जयपुर

2. भक्ति काव्य का समाजशास्त्र

लेखक – प्रेमशंकर

प्रकाशक – राधाकृष्ण प्रकाशन प्रा. लि. दिल्ली

3. सूरदास और नरसिंह मेहता, तुलनात्मक अध्ययन

लेखक – भ्रमरलाल जोशी

प्रकाशक, गुर्जर–भारती, अहमदाबाद

4. मीरा

लेखक – मंजू चतुर्वेदी

प्रकाशक – राज. हिन्दी ग्रन्थ अकादमी, जयपुर

5. मीराबाई की भक्ति–साधना

लेखक – सुरेखा शहापुरे

प्रकाशक – श्रुति पब्लिकेशन्स

अध्ययन की आवश्यकता –

(1) ज्ञान के विकास में सहायक

(2) उद्देश्य प्राप्ति के लिए सर्वोत्तम क्रिया

(3) समाज की नवीन ज्ञान एवं गति प्रदान करना।

(4) जीवन के उद्देश्य की प्राप्ति का सरल उपाय देना।

(5) सुधार में सहायक

(6) सत्य व ज्ञान की खोज करना

(7) प्रशासनिक क्षेत्र में सफलता प्रदान करना

(8) अध्यापक के लिए अत्यन्त उपयोगी

(9) जिज्ञासा मूल प्रवृति की सन्तुष्टि में सहायक

(10) सामाजिक विकास मे सहायक

शोध का उद्देश्य – प्रस्तावित शोध के उद्देश्य को निम्नलिखित बिन्दुओं द्वारा प्रकट किया जा सकता है –

(1) मानव जीवन की विभिन्न समस्याओं, कठिनाईयों व संघर्षों को त्यागपूर्ण झाँकी दिखाना।

(2) तत्कालीन राजनीतिक, सामाजिक और आर्थिक समस्याओं को लेकर उनका यथार्थ चित्रण, एक स्पष्टीकरण के पश्चात् उनका समाधान प्रस्तुत करना।

(3) समाज, सामाजिक संस्थाओं के टूटन, विघटन एवं खोखलेपन का चित्रण करना।

(4) नारी व शोषण वर्ग के प्रति संवेदना व्यक्त करना।

(5) मीरा और नरसी मेहता के काव्य के आधार पर स्त्री पुरुषों के सम्बन्धों का अन्वेषण करना।

(6) मीरा और नरसी मेहता के काव्य के आधार पर महानगरीय जीवन की विभिन्न विसंगतियों का वर्णन करना।

(7) मीरा और नरसी मेहता के काव्य के आधार पर सामाजिक चिन्ताओं की अभिव्यक्ति और स्त्री, पुरुषों के सम्बन्धों का अन्वेषण करना।

(8) मीरा व नरसी काव्य को ध्यान में रखते हुए व्यक्तिगत, सामाजिक, नैतिक, आर्थिक, जाति–वर्ग–वर्ण, पूँजीवाद, समाजवादी संघर्ष को उभारना।

(9) काव्य के माध्यम से स्त्री–पुरुषों के सम्बन्धों के विविध रूपों को चित्रण करना।

(10) लोक जीवन, लोक भावनाओं के सजीव चित्रों को प्रस्तुत करना।